

अब सत्य रहा ललकार - ये दुनियां मतलब की - ये दुनियां - ॥३॥

कहे घरती का भी मार - ये दुनियां मतलब की - ये दुनियां - ॥३॥

अब सत्य रहा - कहे घरती का -

१ पल्लव चूने कुटुम कबीला - माई, लक्ष्मी का है ममेला ॥२॥

खाली दिखाने का लगता है - माया का वजार - हां माया का वजार -

अब सत्य रहा - कहे घरती का - ये दुनियां - ॥३॥

२ वृद्ध आश्रम भरे पड़े हैं - बड़े बड़े सजे खड़े हैं ॥२॥

मनमाना से स्वर्च है करते हैं - सेवा में बीमार - हां सेवा में बीमार -

अब सत्य रहा - कहे घरती का - ये दुनियां - ॥३॥

३ गल्ल पड़े तो दौड़ के आते - बातें नित नई रोके सुनाते ॥२॥

कपड़ जाल मन से ना निकला है - आंसू के उपहार - हां आंसू के उपहार -

अब सत्य रहा - कहे घरती का - ये दुनियां - ॥३॥

४ ज्ञान को सुम के दूर से भागे - मूठ, फूरेब में सबसे अगे ॥२॥

घोखा देकर धन को कमाते हैं - खर्चों से है खार - हां खर्चों से -

अब सत्य रहा - कहे घरती का - ये दुनियां - ॥३॥

५ उजला तन पर मन है काला - हिंसक भावों में मतवाला - ॥२॥

किसको मार किसको दौड़े हैं - अजब चला व्यापार - हां अजब -

अब सत्य रहा - कहे घरती का - ये दुनियां - ॥३॥

६ कहते कुद और कुद करते हैं - नहीं विद्याता से डरते हैं ॥२॥

वने मौत के दीवाने से हैं - क्या समझें उपकार - हां क्या समझें -

अब सत्य रहा - कहे घरती का - ये दुनियां - ॥३॥

७ आखों से सब देख रहे हैं - लाल बड़े अनमोल कहे हैं - ॥२॥

"श्री बाबा श्री" अब सोच में डूबे हैं - बचा है हाहाकार - हां बचा है -

अब सत्य रहा ललकार - ये दुनियां मतलब की - ये दुनियां - ॥३॥

कहे घरती का भी मार - ये दुनियां मतलब की - ये दुनियां - ॥३॥